CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 25th Jan. 2022, Revised on 18th Feb. 2022, Accepted 15th Mar. 2022

शोध–आलेख

किया (टास्क) आधारित भाषा षिक्षण एवं अधिगम

* डॉ. बी.एल. श्रीमाली
सह आचार्य (शिक्षा)
जर्नादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
Email ID: shrimalibl@gmail.com, Mob.- 09460693771

मुख्य शब्द– *जनसंख्या, शैक्षिक, आर्थिक एवं सामाजिक, जनसांख्यिकी, जनांकिकी आदि।*

शोध सारांश

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज में उसे अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए उसे अपने विचारों का आदान–प्रदान करना पड़ता है। विचारों के आदान–प्रदान करने का भाषा ही प्रभावी साधन है। मनुष्य अपने मन में उठे विचारों एवं भावों को दूसरों तक पहुॅचाना चाहता है। भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का महत्त्वपूर्ण साधन या माध्यम है। यही वह साधन है जो मनुष्य को अपनी आवष्यकताओं की पूर्ति के लिए काम में लेना पड़ता है। इससे मनुष्य की सामाजिकता प्रमाणित होती है।

भाषा और सम्प्रेषण

Language is a purely human and noninstictive method of communicating ideas, emotions and desires by means of voluntarily produced symbols.

– सपीर

जब भाषा नहीं थी तब मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए निष्चित संकेतों का प्रयोग करता था। धीरे–धीरे मनुष्य की अभिव्यक्ति में प्रौढ़ता आती गई। एक समय आया जब मनुष्य को स्वर का सहारा मिला। तत्पष्चात् व्यक्ति विधिवत भाषा के माध्यम से अपने विचार दूसरों तक पहुॅचाने लगा एवं दूसरों के विचारों को स्वयं भली–भॉति समझने लगा। इस प्रकार भाषा का उत्तरोत्तर विकास होने लगा एवं दैनिक व्यवहार में इसका सम्प्रेषणात्मक प्रयोग होने लगा।

मानव की शक्ति सम्प्रेषण है; भाषा भावनाओं की अभिव्यक्ति है। अन्य प्राणियों को यह सुविधा उतनी प्राप्त नहीं है जितनी मानव को। भाषा के कारण ही ज्ञान सदियों से लेकर आज तक उपलब्ध है। हर प्रकार का ज्ञान भाषा में उपलब्ध है। भाषा के कारण ही हम

सामाजिक प्राणी हैं। मानव की प्रगति में भाषा विषेष रूप से सहायक रही है। हमारे पूर्वजों के समस्त अनुभव हमें भाषा के माध्यम से ही प्राप्त हुए हैं। हमारे सभी शास्त्र और उनसे होने वाले सभी लाभ भाषा का ही परिणाम हैं।

भाषाओं का संसार

संसार में अनेकानेक भाषाएँ तथा बोलियाँ हैं। इस विषय में एक लोकोक्ति है –

चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी।

अर्थात् पानी का स्वाद कुछ दूरी पर सामान्यतः बदल जाता है और भाषा भी इसी प्रकार कुछ न कुछ परिवर्तित हो जाती है। विचारणीय बात यह है कि जब कुछ दूरी पर भाषा में कुछ न कुछ परिवर्तन दृष्टिगत होने लगता है तो इतने बड़े संसार में कितनी अधिक भाषाएँ और बोलियाँ होगी। गणना करने वाले भाषा–वैज्ञानिकों ने इनकी संख्या 2796 बताई है। भाषा वैज्ञानिकों के समूह के मतानुसार विश्व की समस्त भाषाओं का उद्भव वैदिक भाषा या वैदिक संस्कृत है। हालांकि इस बात पर भाषा वैज्ञानिकों में कुछ विवाद अभी भी है।

बालक जब जन्म लेता है तब वह सर्वप्रथम अपनी माता एवं परिवार के अन्य सदस्यों के सम्पर्क में आता है और औपचारिक रूप से उनके सम्पर्क में मातृभाषा सीखना शुरू करता है। कुछ समय पश्चात् वह विद्यालय में प्रवेश लेता है एवं औपचारिक रूप से द्वितीय और तृतीय भाषा को सीखता है।

विदे ाों में भाषा अधिगम एवं शिक्षण में हुए अनेक शोधकार्यों के फलस्वरूप कई नवीन उपागम एवं विधियों को विकसित किया गया है जिनमें से प्रमुख निम्नांकित हैं :–

1.	CLT	:	Communicative Language Teaching.
2.	CBI	:	Content Based Instruction.
3.	TBA	:	Task-Based Approach.
4.	MI	:	Multiple Intelligences.
5.	NFA	:	Notional-Functional Approach.
6.	PPP	:	Presentation, Practice and Production Model.
7.	ESA	:	Engage, Study and Activate Model.
8.	TTT	:	Test, Teach and Test Model.
9.	CLL	:	Community Language Learning.
10.	LA	:	Lexical Approach.

1960 के दशक में प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानितक नोम चोमस्की ने भाषायी दक्षता, सम्प्रेषण दक्षता एवं सम्प्रेषण प्रयोग पर क्रान्तिकारी विचार रखे। फलस्वरूप भाषा शिक्षण के केन्द्र में सम्प्रेषण का विचार आया। इस प्रकार सम्प्रेषण दक्षता ि ाक्षण भाषा ि ाक्षण का महत्त्वपूर्ण अंग बना। सम्प्रेषणात्मक भाषा ि ाक्षण में मूल उद्दे य बालकों में सम्प्रेषण कौ ाल विकसित करना होता है। शब्द, वाक्य इत्यादि की शुद्धता के स्थान पर सम्प्रेषण को महत्त्व दिया जाता है। परम्परागत व्याकरण ि ाक्षण के स्थान पर संदर्भ

आधारित भाषा–अधिगम की सहज, रोचक, अर्थपूर्ण परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है। समूह कार्य, चर्चा इत्यादि सामाजिकतायुक्त सन्दर्भ सृजित किए जाते हैं। शिक्षक एक सुविधा प्रदाता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है।

NFA, CBI, CLL, LA, TBA वस्तुतः Communicative Language Teaching (सम्प्रेषणात्मक भाषा षिक्षण) की शाखाएँ हैं जो किसी विचार विषेष पर बल देती है। NFA में विचारों एवं क्रियाओं, CBI में विषय–वस्तु, CLL में सामाजिक समूह, LA में शब्दों, TBA में 'टास्क' (क्रिया) के माध्यम से सम्प्रेषण का विकास किया जाता है। PPP, ESA एवं TTT Models संरचनावाद के परिष्कृत स्वरूप हैं जिसमें सम्प्रेषण के कुछ तत्त्वों पर आंषिक ध्यान दिया जाता है। PPP में भाषा तत्त्वों का प्रस्तुतीकरण, अभ्यास एवं प्रयोग होता है। ESA में विद्यार्थियों को पठन सामग्री देकर अध्ययन करने एवं अभिव्यक्ति करने पर बल दिया जाता है। TTT में परीक्षण, षिक्षण एवं पुनः परीक्षण की संरचना होती है।

किया आधारित उपागम

'क्रिया आधारित उपागम' से तात्पर्य भाषायी कौशल की उस गतिविधि से है जिसमें विद्यार्थी द्वय समूह अथवा समूह में अध्यापक द्वारा प्रदत्त कार्य करते हैं; किसी पठन सामग्री का अध्ययन कर सूचना को संकलित करते हैं एवं उस संकलित सूचना को लेखन कौशल के माध्यम से स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करते हैं।

इस उपागम के माध्यम से किए जाने वाले शिक्षण में सामान्यतः निम्नांकित तत्त्व होते हैं–

1. रुचिकर प्रकरण एवं विषय–वस्तु का प्रयोग
2. प्रदत्त कार्य/गतिविधि
3. विचार मंथन (ब्रेन स्टोर्मिंग)
4. आधिकारिक भाषा प्रयोग
5. सम्प्रेषण पर बल

इस उपागम में मूल बल इस बात पर रहता है कि विद्यार्थी क्रियाशील होकर भाषा सीखे तथा भाषा का प्रयोग किसी सम्प्रेषणात्मक कार्य को करने के लिए करे। इस उपागम में व्याकरण अथवा भाषा की शुद्धता साध्य नहीं होती वरन् सम्प्रेषण अथवा सम्प्रेषण हेतु प्रयुक्त व्यूह रचना साध्य होती है। इस उपागम में पाठ का प्रारम्भ औपचारिक व्याकरण–शिक्षण से न होकर उन शब्दों, वाक्यांशों से होता है जिनके माध्यम से विद्यार्थी निर्धारित–क्रिया को सम्प्रेषण के सन्दर्भ में पूरा करते हैं।

इस उपागम में उस भाषा का प्रयोग किया जाता है जो सम्प्रेषण में अथवा सम्प्रेषण सीखने में मदद करती है। इसमें प्रक्रिया पर बल होता है, उपलब्धि अथवा कार्य सम्पादन पर नहीं। विद्यार्थी आपस में सम्प्रेषणात्मक अन्तःक्रिया करके जैसे–चर्चा, परिचर्चा, प्रश्नोत्तर द्वारा भाषा सीखते हैं।

इस उपागम के माध्यम से शिक्षक छात्रों को आधिकारिक भाषा के माध्यम से रुचिकर प्रकरण (विषय–वस्तु) का शिक्षण करता है तथा उस रुचिकर प्रकरण एवं विषय–वस्तु के आधार पर छात्रों को हल करने के लिए अधिगम समस्या देता है। छात्र विचार–मंथन ;ठतंपदै.जवतउपदहद्ध करते हुए एवं शिक्षकीय निर्देशों का पालन करते हुए उस समस्या को हल करते हैं। इस तरह उस प्रदत्त कार्य को हल करके तदनुसार भाषायी अधिगम व्यवहार करते हैं। छात्र शिक्षक को अधिगम कार्य का निष्कर्ष बताते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा छात्र भाषा, विषय–वस्तु एवं सम्प्रेषणीय कौशल को सीखते हैं।

किया (टास्क) आधारित उपागम की सम्प्रत्यात्मक रूपरेखा

(1) क्रिया (टास्क) का सम्प्रत्यय

सामान्यतः भाषा शिक्षण में 'टास्क' (क्रिया) से तात्पर्य व्याकरण के अभ्यास सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियों से समझा जाता है। परन्तु इसमें इसे भिन्न सन्दर्भ में देखा गया है। यहॉ 'टास्क' से तात्पर्य विषय–वस्तु को पढ़कर/पढ़ते हुए उसमें से सूचनाओं को संकलित करना एवं उन संकलित सूचनाओं को लेखन के माध्यम से अन्यत्र सम्प्रेषित एवं स्थानान्तरित करने से है। प्रसिद्ध समकालीन भाषा वैज्ञानिक **जेन विलिस** ने अपनी पुस्तक में 'टास्क' को इस प्रकार परिभाषित किया है :–

Tasks are always activities where the target language is used by the learners for a communicative purpose (goal) in order to achive an outcome.

भावार्थ यह है कि 'टास्क' वे क्रियाएँ/गतिविधियॉ हैं जिनमें विद्यार्थी पढ़ायी जाने वाली भाषा का प्रयोग किसी उद्देश्य की प्राप्ति एवं सम्प्रेषण के लिए करते हैं।

Prof. N.S. Prabhu (1991) ने 'टास्क' को इस प्रकार परिभाषित किया है :–

'टास्क' से तात्पर्य उस गतिविधि से है जिसमें विद्यार्थी किसी प्रदत्त सूचना के माध्यम से किसी विचार प्रक्रिया से किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं।कक्षा–कक्ष में शिक्षक के निर्देशानुसार विद्यार्थी द्वय समूह में अथवा समूह में प्रदत्त कार्य एवं गतिविधि को सम्पन्न कर तथा किसी पठन सामग्री का अध्ययन कर सूचना को संकलित करते हैं। वे विचार–मंथन करते हुए उस संकलित सूचना को लेखन के माध्यम से सम्प्रेषित, स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करते हैं।

(2)जेन विलिस के अनुसार 'टास्क' के प्रकार

विभिन्न भाषाविदों ने 'टास्क' के अलग–अलग प्रकार बताये हैं। **जेन विलिस** (2004) ने अपनी पुस्तक में 'टास्क' के छः प्रकार बताये हैं जो निम्नलिखित हैं :–

(1) सूचीकरण क्रिया

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थी द्वय ;च्यतद्ध समूह अथवा समूह में बैठकर पठन सामग्री को पढ़ते हैं। वे उस पठन सामग्री को पढ़ते हुए एवं विचार–मंथन करते हुए विषय–वस्तु आधारित सूचनाओं अथवा शब्द विशेष की प्रकृति के समान शब्दों को खोजते हैं एवं उनकी सूची बनाते हैं। तत्पश्चात् उस निर्मित सूची के आधार पर अन्वेषित (खोजी हुई) विषय–वस्तु को लेखन के माध्यम से स्थानान्तरित एवं सम्प्रेषित करते हैं।

(2) क्रम में जमाना

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थी द्वय समूह अथवा समूह में पठन सामग्री को पढ़ते हैं तथा विचार–मंथन करते हुए निम्नांकित अधिगम कार्य करते हैं :–

(अ) तार्किक एवं काल क्रम के अनुसार वस्तुओं, क्रियाओं और घटनाओं को क्रमबद्ध जमाना।

(ब) व्यक्तिगत मूल्यों अथवा विशिष्टताओं के अनुसार क्रमबद्ध जमाना।

(स) दिये गए शीर्षक में उसकी विशिष्टता का ध्यान रखते हुए विषय–वस्तु, मूल्य या सूचना को क्रमशः जमाना।

(द) जहॉ शीर्षक नहीं दिया गया है वहॉ विभिन्न विधियों से घटनाओं, सूचनाओं, मूल्यों को वर्गीकृत करना।

(3) तुलनात्मक क्रिया

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थी निर्धारित समूह में बैठकर किसी विषय पर विभिन्न स्रोतों से कोई सूचना संकलित करते हैं। फिर उन सूचनाओं की समानता एवं असमानता के विषय में चर्चा करते हुए निष्कर्ष निकालते हैं। वे किसी विषय–वस्तु के बारे में समानता प्रदर्शित करने वाले बिन्दुओं को एक तरफ लिखते जाते हैं और असमानता प्रदर्शित करने वाले बिन्दुओं को दूसरी तरफ लिखते जाते हैं। फिर उनकी आपस में तुलना करते हुए अन्तर स्थापित करते हैं।

(4) समस्या समाधान किया

यह 'टास्क' विद्यार्थी के बौद्धिक एवं तार्किक क्षमता पर आधारित होता है। इसके अन्तर्गत विद्यार्थी के सामने चुनौतीपूर्ण समस्याएँ रखी जाती हैं। उन समस्याओं का विद्यार्थी को निर्धारित समय में समाधान ढूँढना होता है।

इसमें विद्यार्थी के सम्मुख वास्तविक जीवन में आने वाली समस्याओं को रखा जाता है और उनका समाधान निश्चित समय में करना होता है, जैसे – 'अगर आपके सामने यह परिस्थिति होती तो आप क्या करते?'

छात्रों को अपूर्ण कहानी, अपूर्ण कविता, अपूर्ण प्रतिवेदन प्रदान किए जाते हैं। विभिन्न घटनाओं को विद्यार्थियों के सामने रखकर उनसे निर्धारित समय में समाधान की अपेक्षा की जाती है। छात्र विचार–मंथन करते हुए समस्या का समाधान प्रस्तुत करते हैं।

(5) व्यक्तिगत अनुभवों का आदान–प्रदान

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभवों का आदान–प्रदान करते हैं इसमें विद्यार्थी किसी भी विषय–वस्तु/घटना/समस्या पर अपने अनुभव अपने साथी छात्रों को सुनाते हैं एवं दूसरे छात्रों के अनुभव स्वयं सुनते एवं ग्रहण करते हैं।

कक्षा–कक्ष शिक्षण के सन्दर्भ में विद्यार्थी किसी प्रकरण/घटना/विशेष दिवस/अन्य सूचना/महापुरुष के बारे में दूसरे छात्रों की धारणा, दृष्टिकोण, अभिमत को जानने का प्रयास करते हैं एवं उसका प्रतिवेदन तैयार करते हैं।

(6) सृजनात्मक किया

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थी कोई नवीन एवं मौलिक कार्य करते हैं। इसमें वे छात्रों द्वारा अपने निर्धारित समूह में पूर्व वर्णित 'टास्क' जैसे – विचार–मंथन प्रामाणिक सूचनाओं का संकलन, क्रम में जमाना, तुलना करना, समस्या समाधान एवं अन्य क्रियाओं के आधार पर कोई नवीन एवं मौलिक कार्य करते हैं।

यह 'टास्क' विद्यार्थियों के छोटे समूह में करवाया जाता है। इसके अन्तर्गत किया गया कार्य नवीन एवं मौलिक होता है। शिक्षक छात्रों को निर्धारित समूह में किसी विषय पर कहानी, कविता, गीत, खेल, लिखने सम्बन्धी 'टास्क' करवाया जा सकता है। इस हेतु प्रकरण शिक्षक द्वारा निर्देशित होता है। कार्य के अन्त में लिखे गए/किए गए 'टास्क' की समीक्षा/जॉच अन्य समूह द्वारा की जाती है।

(2) पिका, केनेजी एवं फेलोडन (1993) के अनुसार 'टास्क' के प्रकार

पिका, केनेजी एवं फेलोडन ने 'टास्क' (क्रिया) को अन्तःक्रिया के आधार पर निम्नलिखित पॉच भागों (पृष्ठ सं. 223–243) में विभाजित किया है जो निम्नलिखित हैं :–

(1) जिग्सॉ टास्क इस 'टास्क' के अन्तर्गत छात्रों के निर्धारित समूह को विषय–वस्तु की आंशिक एवं भिन्न सूचनाएँ दी जाती हैं जिन्हें जोड़कर छात्र सम्पूर्णता प्रदान करते हैं। जैसे तीन विभिन्न व्यक्तियों या समूहों के पास एक कहानी के भिन्न–भिन्न

भाग होते हैं और छात्र समूह आपस में अन्तःक्रिया करते हुए एवं अपनी विषय–वस्तु के प्रस्तुतीकरण के फलस्वरूप कहानी को समग्र रुप प्रदान करते हैं।

(2) **सूचना–अन्तराल टास्क** इस 'टास्क' के अन्तर्गत एक विद्यार्थी या विद्यार्थियों के एक समूह के पास सूचनाओं का एक भाग रहता है और दूसरे विद्यार्थी या विद्यार्थियों के पास सूचनाओं का दूसरा भाग रहता है। दोनों समूह आपस में चर्चा/संवाद करते हैं और प्रश्नों के माध्यम से दूसरे समूह के पास विद्यमान सूचना का पता लगाकर विषय–वस्तु को समग्रता प्रदान करते हैं।

(3) **समस्या समाधान टास्क**

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थियों को एक समस्या दे दी जाती है और उस समस्या के साथ सूचनाओं का संकलन दे दिया जाता है। छात्र उस समस्या को समझकर उन सूचनाओं के संकलन में से समाधान ढूँढते हैं। यह अपेक्षा की जाती है कि समस्या का समाधान प्रत्येक समूह एक ही निकाले।

(4) **निर्णय निर्माण टास्क**

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थियों को एक समस्या दे दी जाती है जिसके कई सम्भावित हल होते हैं। विद्यार्थियों को आपस में संवाद तथा विचार–विमर्श के द्वारा एक हल चुनने हेतु प्रेरित किया जाता है। छात्र उन संभावित हल में से एक हल ढूँढते हैं।

(5) **मत–विनिमय टास्क**

इस 'टास्क' के अन्तर्गत विद्यार्थी विचार–विमर्श एवं विचारों के आदान–प्रदान में व्यस्त रहते हैं। वे दी गई समस्या एवं उसके समाधान के संवाद करते हैं। परन्तु उन्हें किसी निर्णय पर पहुँचने की आवश्यकता नहीं होती है।

(3) किया (टास्क) आधारित उपागम में शिक्षण प्रकिया

जेन, विलिस (2004) ने अपनी पुस्तक में, **डेविड, नुनन** (2004) में तथा **रोड, इलिस** (2004) ने अपनी पुस्तकों में 'क्रिया आधारित उपागम' की शिक्षण प्रकिया के मुख्य रूप से तीन सोपान प्रस्तुत किए हैं जो निम्नलिखित हैं :–

(1) **प्री–टास्क**

इसके अन्तर्गत शिक्षक छात्रों को प्रकरण से अवगत करवाता है। इस हेतु शिक्षक छात्रों को निम्नलिखित में से कोई एक या दो गतिविधि करवाता हुआ प्रकरण पर लाने का प्रयास करता है एवं प्रकरण तथा उसमें वर्णित विषय–वस्तु का परिचय करवाता है–

1. प्रकरण पर विचार–मंथन करवाना।
2. प्रकरण पर आधारित चित्र प्रस्तुत करना।
3. प्रश्नोत्तर करना।
4. अनुमान लगाने हेतु प्रेरित करना।
5. प्रकरण पर आधारित सूचना बनवाना।

6. प्रकरण एवं विषय–वस्तु पर आधारित भाषायी कार्य करवाना।

7. भाषायी खेल–खेलाना।

8. प्रकरण पर विद्यमान ज्ञान का आदान–प्रदान करवाना।

9. कथा/घटना/प्रेरणात्मक विषय–वस्तु सुनाना।

(2) टास्क–चक्र

इस सोपान के तीन उप–सोपान हैं –

1. **टास्क** – इस सोपान से पूर्व तक छात्र प्रकरण एवं पाठ में वर्णित विषय–वस्तु से अवगत हो जाते हैं। तत्पश्चात शिक्षक सम्बन्धित विषय–वस्तु छात्रों को वितरित करता है एवं छात्रों को उस विषय–वस्तु पर आधारित 'टास्क' करने का निर्देश देता है। इस उपागम के माध्यम से छात्र निर्धारित समूह में या दो के समूह में भाषायी कार्य करता हुआ भाषा सीखता है।

2. **योजना** – इस उप–सोपान के अन्तर्गत शिक्षक छात्रों को पठन एवं लेखन पर आधारित किए गए कार्य एवं उसके प्राप्त परिणामों को लिखने का निर्देश देता है। शिक्षक के निर्देशानुसार छात्र 'टास्क' करने की प्रक्रिया का वर्णन अपने–अपने निर्धारित समूह में तैयार करते हैं।

3. **प्रतिवेदन –** पठन एवं लेखन सम्बन्धी 'टास्क' को करने की प्रक्रिया का प्रतिवेदन समूह का प्रतिनिधि प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात् सभी समूह आपस में चर्चा–परिचर्चा एवं विचार विनिमय द्वारा अपने किए हुए कार्य का स्पष्टीकरण देते हैं। सही निष्कर्ष को सभी समूह स्वीकार करते हैं एवं गलत निष्कर्ष को ठीक करने का प्रयास करते हैं।

(3) भाषायी अभ्यास कार्य

इस सोपान के अन्तर्गत शिक्षक पाठ में आये नवीन शब्दों एवं वाक्यों का विश्लेषण करता है एवं निम्नलिखित दो उप–सोपानों की सहायता से उनका शिक्षण करता है।

1. **विश्लेषण** – इस उप–सोपान के अन्तर्गत शिक्षक पाठ में आए नवीन शब्दों के समान शब्दों की संरचना करने हेतु छात्रों को प्रेरित करता है। छात्र निर्धारित समूह में नवीन शब्दों की संरचना का प्रयास करते हैं एवं शिक्षक के सहयोग से अन्य छात्र समूहों के साथ अपने उत्तर की जॉच करते हैं। छात्र–समूहों द्वारा बनाये गए नवीन शब्दों की अन्तिम जॉच शिक्षक करता है। इस प्रकार छात्र–समूह शब्द निर्माण करते हुए नवीन शब्द सीखते हैं।

2. **अभ्यास** – इस उप–सोपान के अन्तर्गत शिक्षक पाठ में आए विभिन्न प्रकार के वाक्यों (सकारात्मक वाक्य, नकारात्मक वाक्य, आदेशात्मक वाक्य, आशीर्वादात्मक वाक्य, प्रश्न वाचक वाक्य, विस्मयादिबोधक वाक्य इत्यादि) के समान वाक्य संरचना करने हेतु छात्रों को प्रेरित करता है। छात्र निर्धारित समूह में नवीन वाक्य संरचना का प्रयास करते हैं एवं शिक्षक के सहयोग से अन्य छात्र समूहों के साथ अपने उत्तर की जॉच करते हैं। छात्र समूहों द्वारा बनाये गए नवीन वाक्यों की व्याकरणिक जॉच शिक्षक करता है। इस प्रकार छात्र समूह में वाक्य संरचना करते हैं।

;4द्ध क्रिया(टास्क) आधारित उपागम में शिक्षक की भूमिका

'क्रिया आधारित उपागम' ;जॅं ठॅंमक ।चचतवंबीद्ध के माध्यम से विद्यार्थियों से 'टास्क' करवाये जाते हैं। अतः शिक्षक विषय–वस्तु को पढ़कर 'टास्क' निर्धारित करता है। 'टास्क' चयन करने के पश्चात् वह 'टास्क' को करने की प्रक्रिया निर्धारित करता

हैं। 'टास्क' चयन करने एवं क्रम निर्धारित करने में शिक्षक की भूमिका केन्द्रीय होती है। किसी प्रकरण पर वर्णित विषय–वस्तु एवं व्याकरण पर आधारित एकाधिक 'टास्क' करवाये जाते हैं। अतः शिक्षक चयनित 'टास्क' में से प्राथमिकता के आधार पर निर्धारित क्रम में 'टास्क' करवाता है।

इस उपागम में छात्र 'टास्क' करते हुए भाषा सीखते हैं। 'टास्क' करने से पूर्व छात्रों को 'टास्क' करने हेतु प्रेरित कर मानसिक रुप से तैयार करना पड़ता है। अतः शिक्षक छात्रों को 'टास्क' करने हेतु प्रेरित करता है। शिक्षक छात्रों को पाठ में आये नवीन शब्दों एवं वाक्यों को समझाता है और उनसे सम्बन्धित 'टास्क' करने हेतु प्रेरित करता है। क्रिया आधारित उपागम' के माध्यम से शिक्षण में छात्र समूह या दो के समूह में 'टास्क' करते हुए भाषा अधिगम करता है। शिक्षक कक्षा के सभी छात्रों के ऐसे समूह बनाता है जिसमें प्रतिभाशाली, सामान्य एवं मन्द गति से सीखने वाले विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं। यदि छात्रों को नए तरीके का 'टास्क' को करने में समस्या आती है तो शिक्षक 'प्री–टास्क' के अन्तर्गत उसी के समान 'टास्क' स्वयं करके बताता है। शिक्षक 'टास्क' करने के लिए छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करता है एवं 'टास्क' करते समय आने वाली समस्याओं एवं कठिनाइयों को दूर करता है। शिक्षक योजनानुरूप छात्रों को 'टास्क' करते समय अपेक्षित आवश्यक सामग्री जैसे शब्दकोश, विषय–वस्तु आधारित पत्र–पत्रिकाएँ एवं अन्य सामग्री उपलब्ध करवाता है।

;5द्ध क्रिया (टास्क) आधारित उपागम में छात्र की भूमिका

शिक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्र अधिगम होता है। शिक्षण के केन्द्र में छात्र होता है। 'क्रिया आधारित उपागम' ;जें ठेंमक ।चचतवंबीद्ध की शिक्षण प्रक्रिया में छात्र का मुख्य एवं केन्द्रीय स्थान होता है। छात्र दो अथवा दो से अधिक छात्रों के समूह में 'टास्क' करते हुए भाषा सीखते हैं।

छात्र अपने समूह में या अपने सहभागी के साथ सक्रिय रह कर कार्य करते हैं एवं वे शिक्षक द्वारा प्रदत्त 'टास्क' में अपनी सहभागिता रखकर भाषाधिगम का प्रयास करते हैं। शिक्षक द्वारा प्रदत्त 'टास्क' को करने में प्रत्येक छात्र अपने निर्धारित समूह के साथ सक्रिय रहता है। वे अपने ज्ञान एवं अनुभव का आदान–प्रदान करते हैं। विषय–वस्तु चाहे कठिन हो अथवा सरल, छात्र उस विषय–वस्तु से सम्बन्धित 'टास्क' सहज रूप से स्वीकार करते हैं।

'टास्क' का अभ्यास हो जाने पर छात्र विषय–वस्तु को पढ़कर उसमें से अपने स्वयं के मौलिक चिन्तन के आधार पर नवीन 'टास्क' करने का प्रयास करते हैं वे अपने समूह को एवं अपने सहभागी को 'टास्क' करने की प्रक्रिया से अवगत करवाते हैं।शिक्षक द्वारा प्रदत्त 'टास्क' को सभी छात्र अपने–अपने समूह में करते हैं। उसके पश्चात् शिक्षक के निर्देशानुसार सभी समूहों के प्रतिनिधि अपने–अपने समूह में किए गए कार्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हैं। वे प्राप्त निष्कर्षों एवं परिणामों की तुलना शिक्षक के सहयोग से करते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. मित्तल, डॉ. सन्तोष (2000). संस्कृत शिक्षण. मेरठ : आर लाल बुक डिपो।
2. संस्कृत आयोग का प्रतिवेदन (1956–57). उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी प्रकाशन, प्रकाशक–सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी–1979 प्रथम संस्करण।
3. Willis, Jane (2004). A Framework For Task Based Learning. Oxford Longman.
4. Prabhu, N.S.(1991). Second Language Pedagogy. Oxford: Oxford University Press.

5. Willis, Jane (2004). A Framework For Task Based Learning. Oxford Longman.

6- Richards, Jack C. and Rodgers, Theodore S. (2001). Approches and Methods in Language Teaching. Cambridge : Cambridge University Press.

7- Nunan, David(2004). Designing Tasks For The Communicative Classroom. Cambridge : Cambridge University.

*** Corresponding Author**
डॉ. बी.एल. श्रीमाली
सह आचार्य (शिक्षा)
जर्नादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
Email ID: shrimalibl@gmail.com, Mob.- 09460693771